कलजुग महि कीरतनु परधाना ॥ गुरमुखि जपीऐ लाइि धिआना ॥ (भाग २)

कीरतन करन समें रहाउ दी पंगती दी टेक लैणी जरूरी है

Necessity of taking the Rahoo as main central idea while reciting Gurbani

लेख दा आरंभ २ लेख दा संखेप २ लेख दा सार, निचोड़ जाँ मंतव २

गुरू गरंथ साहिब विच अंकित गुरबाणी अनुसार कीरतनु दी प्रीभाशा इहि है, कि गुरू गरंथ साहिब विच अंकित गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे गुण गाइिन करने, गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे गुणाँ दी वीचार करनी, अकाल पुरखु दे हुकमु ू पूरे सतिगुरू दुआरा समझणा ते अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा अनुसार चलणा, मन ू विकाराँ दे ह्लिआँ वलों सुचेत करन लड़ी बिबेक बुधी हासल करनी, अकाल पुरखु दे नामु रूपी अंम्रित दा सुआद माणणा, हर वेले अकाल पुरखु दा कीरतनु करना, साध संगति विच बैठ के अकाल पुरखु दे गुण गाइिन करने, मन ते काबू करना ते मन ू खिंडण तों रोकणा, सारीआँ गिआन इंद्रीआँ ू विकारा तों रोकणा अते कीरतनु पूरे गुरू दे सबद दुआरा, स्ची बाणी दा ही ही हो सकदा है।

इिस लड़ी इिह जरूरी है, कि गुरबाणी ू ठीक तरीके नाल पड़्हिआ, समझिआ ते वीचारिआ जावे। जे कर गुरबाणी दे सबद ू ठीक तरीके नाल गाइिन नहीं कीता जाँदा है, ताँ उुस दे अरथ भाव बदल जाँदे हन। जे कर अरथ भाव ही बदल गड़े ताँ असीं ठीक वीचार किस तरहाँ कर सकदे हाँ? ठीक गिआन किस तरहाँ हासल कर सकदे हाँ?, अकाल पुरखु दे हुकमु ू किस तरहाँ पछान सकदे हाँ?, सही बिबेक बुधी किस तरहाँ हासल कर सकदे हाँ?, नामु रूपी अंम्रित दा सुआद किस तरहाँ मान सकदे हाँ?, आपणे मन ते काबू किस तरहाँ कर सकदे हाँ? ते आपणीआँ सारीआँ गिआन इंद्रीआँ ू विकारा तों किस तरहाँ रोक सकदे हाँ?

उुदाहरण दे तौर ते, जिस तरहाँ कि **"तुसीं द्लिी जा रहे हो"**। इिस वाक ू व्ख व्ख थाँ ते जोर दे के बोलण नाल अरथ भाव बदल जाँदे हन। "**तुसीं** द्लिी जा रहे हो", (जे कर बोलण समें जोर **तुसीं** ते दिता जाँदा है ताँ अरथ बण जाँदे हन: "तुसीं जाँ होर कोड़ी द्लिी जा रिहा है")। "तुसीं **द्लिी** जा रहे हो", (जे कर बोलण समें जोर **द्लिी** ते दिता जाँदा है ताँ अरथ बण जाँदे हन: "तुसीं द्लिी जाँ कि किसे होर शहिर ू जा रहे हो")। "तुसीं द्लिी **जा रहे हो**", (जे कर बोलण समें जोर **जा रहे हो** ते दिता जाँदा है ताँ अरथ बण जाँदे हन: "तुसीं द्लिी जाँ वी रहे हो कि अजे क्चा प्रोगराम ही है")। इिसे तरहाँ अ्जकल गुरबाणी दे सबद विचों गलत टेक लै के, जाँ रहाए दी पंगती तों इिलावा किसे होर पंगती दी टेक लै के गुरबाणी दे सबदाँ दे भाव अरथ बदल के लोकाँ ू अकसर गुमराह कीता जा रिहा है।

गुरू दी सरन तों बिना अकाल पुरखु दा दर नहीं ल्भदा, अकाल पुरखु दा नामु नहीं मिलदा। इिस लड़ी अजेहा गुरू ल्भणा है, जिस दी सहाइिता नाल उुह सदा थिर रहिण वाला अकाल पुरखु मिल पड़े। जेहड़ा मनु्ख गुरू दी सहाइिता नाल अकाल पुरखु ू ल्भ लैंदा है, उुह आपणे कामादिक वैरीआँ ू मार लैंदा है, उुह आतमक आनंद विच टिकिआ रहिंदा है, उुस ू निसचा हो जाँदा है कि, जो कुझ अकाल पुरखु ू चंगा ल्गदा है, उुही हुंदा है। कोड़ी वी मनु्ख गुरू दे चरनाँ विच सरधा बणा के वेख लड़े, सतिगुरू ू जिहो जिहा किसे ने समझिआ है, उुस ू उुहो जिहा आतमक आनंद प्रापत होइिआ है। जिस सि्ख दा गुरू नाल, गुरू दे शबद दुआरा मिलाप हो जाँदा है, उुस सि्ख अते गुरू दी जोति इिक हो जाँदी है। इिस जगत विच त्रिगुणी माइिआ दे मोह दा पसारा चल रिहा है, जेहड़ा मनु्ख गुरू दे सनमुख रहिंदा है, उुह मनु्ख उुस आतमक दरजे ू हासल कर लैंदा है। अकाल पुरखु ने आपणी मिहर कर के, जिनहाँ मनु्खाँ ू आपणे चरनाँ विच मिलाइिआ है, उुनहाँ दे मन विच अकाल पुरखु दा नामु आ व्सदा है। जिनहाँ दे भागाँ विच नेकी है, अकाल पुरखु उुनहाँ ू साध संगति विच मिलाँदा है। **इिस लड़ी हे भाड़ी! गुरू दी मति लै के सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु विच टिके रहु। सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दे सिमरन दी ही कमाड़ी करो, सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दी सिफति सालाह विच जुड़े रहो।** गुरू साहिब समझाँदे हन कि, मैं उुनहाँ गुरमुखाँ तों सदके जाँदा हाँ, जिनहाँ ने अकाल पुरखु दा नामु पछाण लिआ, अकाल पुरखु दे नामु दी कदर समझी है। आपा भाव तिआग के, मैं उुनहाँ दी चरनीं ल्गदा हाँ, मैं उुनहाँ दे पिआर अनुसार हो के तुरदा हाँ। जेहड़ा मनु्ख नामु जपण वालिआँ दी सरन पैंदा है, उुह आतमक अडोलता दुआरा अकाल पुरखु दे नामु विच लीन हो जाँदा है, उुस ू अकाल पुरखु दा नामु रूपी लाभ हासल हो जाँदा है।

भाई रे गुरमति साचि रहाउ ॥ साचो साचु कमावणा साचै सबदि मिलाउ ॥१॥ रहाउ ॥ जिनी नामु पछाणिआ तिन विटहु बलि जाउ ॥ आपु छोडि चरणी लगा चला तिन कै भाइि ॥ लाहा हरि हरि नामु मिलै सहजे नामि समाइि ॥२॥ (३०-३१)

मनु्ख दी कदर उुस दे गुणाँ करके हुंदी है। गुरू साहिब वी इिक सवाल दी तरहाँ जीव इिसतरी ू समझाँदे हन, कि, हे मेरी माँ! मैं केहड़े गुणाँ दी बरकति नाल आपणी जिंद दे मालक अकाल पुरखु ू मिल सकदी हाँ? मेरे विच ताँ कोड़ी गुण नहीं

है, मैं आतमक रूप तों सॣखणी हाँ, अकल हीण हाँ, मेरे अंदर आतमक ताकत वी नहीं है, फिर मैं परदेसण हाँ, अकाल पुरखु दे चरनाँ, कदे मैं आपणा घर नहीं बणाइिआ, अनेकाँ जूनाँ दे सण्र तों लंघ के इिस मनुखा जनम विच आई हाँ। हे मेरे प्राना दे पती अकाल पुरखु! मेरे पास तेरा नामु धन नहीं है, मेरे अंदर आतमक गुणाँ दा जोबन वी नहीं है, जिस दा मै हुलारा मिल सके। मै अनाथ, आपणे चरनाँ विच जोड़ लै। आपणे प्रानपती अकाल पुरखु दे दरसन वासते मैं तिहाई फिर रही हाँ, उुस, लॣभदी लॣभदी मैं कमली होई पई हाँ। गुरू साहिब बेनती करके समझाँदे हन कि, हे दीनाँ उुते दइिआ करन वाले! हे किरपा दे घर! हे अकाल पुरखु! तेरी मिहर नाल साध संगति ने मेरी इिह विछोड़े दी जलन बुझा दिॣती है। **इिस सबद विच इिही समझाइिआ गिआ है कि, अकाल पुरखु दे मिलाप लई साध संगति विच बैठ के अकाल पुरखु दे गुण गाइिन करने हन ते आपणा हंकार तिआग के अकाल पुरखु दे गुण सिखणे ते अपनाउुंणे हन।**

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥ रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई ॥१॥ नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि अनाथ की करहु समाई ॥२॥ खोजत खोजत भई बैरागनि प्रभ दरसन कउ हउ फिरत तिसाई ॥३॥ दीन दइिआल क्रिपाल प्रभ नानक साधसंगि मेरी जलनि बुझाई ॥४॥१॥११८॥ (२०४)

उुपर लिखिआ सबद गाइिन करन समें रहाउु (*कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई ॥१॥ रहाउु ॥*) दी टेक लैण दी बजाइे, अकसर कई गाइिक, "*दूर ते आई* " दी टेक लैंदे हन, जिस नाल सबद दे भाव अरथ ही बदल जाँदे हन। वार वार इिह सुण के आम मनुख दे मन विच इिही विचार आउुंदा है कि, उुह वी दूरे चल के गुरदुआरा साहिब आइिआ है, इिस लई इिस सबद अनुसार उुस दी अरदास, इिछा जाँ मरजी हुण सुणी जावेगी। अजेहा वार वार गाइिन करके लोकाँ दे मन विच कुझ होर ही पाइिआ जा रिहा है ते उुनहाँ, गुमराह कीता जा रिहा है। जे कर मन लिआ जावे कि अकाल पुरखु इिक अफसर है ते उुस कोल असीं मिलण जाँदे हाँ। वार वार उुस, इिही किहा जावे कि मैं दूरों आई हाँ!, मैं दूरों आई हाँ!, मैं दूरों आई हाँ। ताँ हो सकदा है कि उुह अफसर तंग आ के आपणे चपड़ासी, इिही कहेगा कि, इिस पागल तों मेरा पिछा छडाए। इिस दे उुलट जे कर अफसर दे अॣगे बेनती कीती जावे, कि श्रीमान जी मेरे कोलो किहड़ी गलती हो गई है जाँ मेरे विच किहड़ी खामी रहि गई है, जिस, सुधारन दी कोशिश कराँ, जिस नाल मेरा कंम ठीक हो सके, मेरा जीवन विच सुधार हो सके। हुण इिहो जिहे बोल सुण के ते अजेही आरदास सुण के कोई वी अफसर धिआन नाल सुणेगा ते सहाइिता करन दा जतन करेगा। ठीक इिसे तरहाँ जदों असीं आपणे औगुण तिआग के गुरू दी मत लई अरदास करदे हाँ, अकाल पुरख दे गुण आपणे अंदर पैदा करन दा उुपराला करदे हाँ, ताँ साडा सुधार आपणे आप होणा शुरू हो जाँदा है, जिस सकदा साडा जीवन सफल हो जाँदा है। इिस लई सबद गाइिन करन समें रहाउु दी पंगती दी टेक लैणी बहुत जरूरी है ताँ जो सा जीवन दा सही रसता समझ आ सके, ते जीवन विच गुमराह होण तों बच सकीइे।

कदी वी उुॣची आवाज़ विच मंगिआ नहीं जाँदा है। निमरता नाल नीवें हो के मंगिआ जाँदा है। रोहब वाली आवाज़ नाल मंगिआ कदी प्रवान नहीं हुंदाँ है। मंगताँ उुची आवाज़ विच मंगदा है ताँ बाहर कॣड दिता जाँदा है। जे कर कोई राजे कोलों उुची आवाज़ विच मंगदा है ताँ राजा उुस, जेल विच वी बंद कर देंदा है। इिस लई जे कर गुरू कोलो कुझ मंगण वाले सबद दा कीरतन हो रिहा है, ताँ कदी वी उुची आवाज़ विच नहीं करना चाहीदा है। उुची आवाज़ सिरफ फिलमी गीताँ विच ही लोकाँ, चंगी लगदी है। परंतू गुरबाणी कीरतन विच उुॣची आवाज़ कदे वी प्रवान नहीं हो सकदी है।

जे कर बेड़ी किले (अैंकर) नाल बॣझी है ताँ बेड़ी कदी समुंदर विच रुड़दी नहीं, गवाचदी नहीं। जे कर असीं वी सबद गुरू नाल जुड़े हाँ ताँ ठीक है, नहीं ताँ असीं वी गुमराह हो जावाँगे। इिसे तरहाँ जे कर असीं सबद गाइिन करन समें रहाउु (सबद दा केंदरी भाव) दी टेक नहीं लैंदे हाँ, ताँ असीं सबद दे मूळ भाव तों दूर हो जावाँगे।

गुरू ग्रंथ साहिब दे हरेक सबद विच 'रहाउु' दीआँ इिक जाँ दो तुकाँ आउुंदीआँ हन। 'रहाउु' दा अरथ है 'टिकाउु', 'ठहिरना'। सो सारे सबद, समझण लई पहिलाँ उुस तुक उुते ठहिरना है, जिस दे नाल 'रहाउु' लिखिआ है। गुरू ग्रंथ साहिब जी दे शबदाँ, समझण दा मूल-नियम इिही है कि पहिलाँ 'रहाउु' दी तुक, जाँ पद, चंगी तरहाँ समझ लिआ जाइे। मुख-भाव इिस तुक जाँ पद विच हुंदा है, बाकी दे पद इिस मुख भाव दा विसथार हुंदे हन। **(श्री गुरू गरंथ दरपन, टीकाकार प्रोफैसर साहिब सिंघ पंनाँ ७६४ दे सबद दे नाल)**

जिहड़े मनुख अकाल पुरखु दा नामु तवीत ते जंत्र-मंत्र आदिक दी शकल विच वेचदे हन, उुनहाँ दे जीउुण, लाहनत है, जे उुह बंदगी वी करदे हन ताँ वी उुनहाँ दी 'नामु' वाली ण्सल इिस तरहाँ नालो नाल ही उुॣजड़दी रहिंदी है, ते जिनहाँ दी ण्सल नालो नाल उुॣजड़दी जाइे, उुनहाँ दा खलवाड़ा किॣथे बणना होइिआ? अजेही बंदगी दा कोई चंगा सिॣटा नहीं निकल सकदा है, किउुंकि उुह बंदगी दे सही राह तों खुंझे रहिंदे हन। सही उुॣदम ते मिहनत तों बिना अकाल पुरखु दी हज़ूरी विच वी उुनहाँ दी कोई कदर नहीं हुंदी, ते किसे तरहाँ दी शाबाश नहीं मिलदी। अकाल पुरखु, चित विच वसाउुंणा नाल ते उुस दे

हुकमु ते रज़ा अनुसार चलणा बड़ी सुंदर ते अकल दी ग्ल है, परंतू तवीत जाँ धागे बणा के देण विच रुझ पैण नाल इस अकल ॄ विअरथ गवा लैणा, इस ॄ अकल नहीं आखिआ जा सकदा। इस लड़ी सबद गुरू दुआरा पाड़ी गड़ी अकल वरत के ही अकाल पुरखु दी सेवा करीड़े, भाव सबद वीचार दुआरा अकाल पुरखु वरगे गुण आपणे अंदर पैदा करीड़े, ताँ जो बिबेक बुधी हासल करके जीवन दे सही रसते ते चल सकीड़े। अकल वरत के ही अकाल पुरखु ॄ चेते कीता जा सकदा है ते उस दे दर ते इज़त खटी जा सकदी है। अकल इह है कि अकाल पुरखु दी सिफति सालाह वाली बाणी पड़्हीड़े, इस दे डूंघे भेत समझीड़े ते होरनाँ ॄ अकाल पुरखु दे गुण ते उस दे हुकमु ते रज़ा बारे समझाड़ीड़े। गुरबाणी दुआरा पाड़ी गड़ी अकल वरत के ही किसे तरहाँ दा दान ते सहाइता कीती जावे, इह ना होवे कि दान करन नाल असीं नखटू ते मंगते ही पैदा करी जाड़ीड़े। गुरू साहिब समझाँदे हन, कि ज़िंदगी दा सही रसता सिरफ इही है, अकाल पुरखु दे गुण गाइन करने ते उस दे हुकमु ते रज़ा बारे समझण ते चलणा है, बिबेक बुधी हासल करनी है, इस तों इलावा होर सभ तरहाँ दीआँ ग्लाँ इक शैतान दी तरहाँ हन, जिहड़ीआँ जाँ ताँ साृ शैतान बणा सकदीआँ हन, ते जाँ असीं शैतान पैदा करन दा कारन बण सकदे हाँ।

सलोक मः १ ॥ ध्रिगु तिना का जीविआ जि लिखि लिखि वेचहि नाउ ॥ खेती जिन की उजड़ै खलवाड़े किआ थाउ ॥ सचै सरमै बाहरे अगै लहहि न दादि ॥ अकलि इह न आखीऐ अकलि गवाईऐ बादि ॥ अकली साहिबु सेवीऐ अकली पाईऐ मानु ॥ अकली पड़्हि कै बुझीऐ अकली कीचै दानु ॥ नानकु आखै राहु इहु होरि गलाँ सैतानु ॥१॥ (१२४५)

विहले मंगतिआँ ॄ पैसे दे के जाँ लंगर खवा के उनहाँ दीआँ आदताँ खराब करन दा कोड़ी लाभ नहीं है। ***"अकली साहिबु सेवीऐ अकली पाईऐ मानु ॥ अकली पड़्हि कै बुझीऐ अकली कीचै दानु ॥ नानकु आखै राहु इहु होरि गलाँ सैतानु ॥१॥"***, इह सबद साृ सुचेत करदा है, कि दान वी अकल नाल सोच समझ के करना चाहीदा है, नहीं ताँ सैतान पैदा करन दे कसूरवार असीं खुद आप होवाँगे। इस लड़ी अखाँ मीट के दान करन दी बजाड़े, सोच समझ के माइआ देणी चाहीदी है, जिस नाल किसे लोड़वंद दी भलाड़ी हो सके। किसे गरीब किरती ॄ रुजगार जाँ धन दी लोड़ हो सकदी है, ते किसे अमीर ॄ सबद गुरू अनुसार जीवन जाच दी लोड़ हो सकदी है, किसे लोड़वंद ब्चे ॄ विदिआ ते गिआन दी लोड़ हो सकदी है। मंगते ॄ पैसे दे के उस दी आदत होर विगाड़नी नहीं चाहीदी, बलकि उस ॄ किरत करन लड़ी प्रेरना चाहीदा है।

मनुखा जीव दे कीह व्स? जीव उही कुझ करदा है, जो अकाल पुरखु उस तों कराँदा है। जीव दी कोड़ी सिआणप कंम नहीं आउंदी, जो कुझ अकाल पुरखु करना चाहुंदा है, उही कर रिहा है। **जेहड़ा जीव अकाल पुरखु ॄ चंगा लगदा है, उस ॄ अकाल पुरखु दी रज़ा मिठी लगण लग पैंदी है। गुरू साहिब समझाँदे हन, कि, अकाल पुरखु दे दर तों उस जीव ॄ आदर मिलदा है, जिहड़ा उस दी रज़ा विच रहि के उस सदा थिर रहिंण वाले अकाल पुरखु दे नामु विच लीन रहिंदा है।** साडे कीते होड़े कंमाँ दे संसकाराँ दा जो इकठ साडे मन विच उकरिआ पिआ हुंदा है, उस दे अनुसार साडी जीवन दी राहदारी लिखी पड़ी हुंदी है, उस दे उलट किसे दा ज़ोर नहीं चल सकदा। फिर जेहो जेहा जीवन दा लेख लिखिआ पिआ है, उस दे अनुसार जीवन दा सफर उघड़दा चला आउंदा है, कोड़ी मनुख उनहाँ लीहाँ ॄ आपणे उदम नाल मिटा नहीं सकदा, उनहाँ ॄ मिटाण दा इको इक तरीका है, कि अकाल पुरखु दी रज़ा विच तुर के उस दी सिफति सालाह करदे रहिणा है। जे कर कोड़ी जीव इस धुरों लिखे हुकमु दे उलट बड़े इतराज़ करी जाड़े, हुकमु अनुसार तुरन दी जाच न सिखे, उस दा संवरदा कुझ नहीं, सगों उस दा ना बड़बोला ही पै सकदा है। जीवन दी बाज़ी शतरंज दी बाज़ी वरगी है, रज़ा दे उलट तुरिआँ ते गिले कीतिआँ इह बाज़ी जिती नहीं जा सकेगी, नरदाँ कचीआँ ही रहिंदीआँ हन, पुगदीआँ सिरफ उही हन, जो पुगण वाले घर विच जा पहुंचदीआँ हन। इस रसते विच ना कोड़ी विदवान पंडित सिआणा किहा जा सकदा है, ना कोड़ी अनपड़्ह मूरख भैड़ा मंनिआ जा सकदा है। जीवन दे सही रसते विच ना निरी विदवता सफलता दा वसीला है, ते ना अनपड़्हता वासते असफलता ज़रूरी है। उही जीव बंदा अखवा सकदा है, जिस ॄ अकाल पुरखु आपणी रज़ा विच रख के उस पासों आपणी सिफति सालाह कराँदा है।

आसा महला १ ॥ कीता होवै करे कराइआ तिसु किआ कहीऐ भाड़ी ॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ कीते किआ चतुराड़ी ॥१॥ तेरा हुकमु भला तुधु भावै ॥ नानक ता कउ मिलै वडाड़ी साचे नामि समावै ॥१॥ रहाउ ॥ किरतु पड़िआ परवाणा लिखिआ बाहुड़ि हुकमु न होड़ी ॥ जैसा लिखिआ तैसा पड़िआ मेटि न सकै कोड़ी ॥२॥ जे को दरगह बहुता बोलै नाउ पवै बाजारी ॥ सतरंज बाजी पकै नाही कची आवै सारी ॥३॥ ना को पड़िआ पंडितु बीना ना को मूरखु मंदा ॥ बंदी अंदरि सिफति कराड़े ता कउ कहीऐ बंदा ॥४॥२॥३६॥ (३५६)

अकाल पुरखु दी सिफति सालाह करन वाला कीरतन ताँ ही सफल हो सकदा है, जे कर गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे हुकमु ते रज़ा ॄ ठीक तरीके नाल समझ ते पछान सकीड़े। जिस लड़ी जरूरी है, कि गुरबाणी ॄ वीचारन समें गुरबाणी दी रहाउ दी पंगती जाँ किसे उचित पंगती दी टेक लड़ी जावे।

सुखमनी साहिब दे पूरे पाठ विच रहाउ दी सिरफ इक ही पंगती है, "***सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु ॥ भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥***"। अकाल पुरखु दा अंम्रित रूपी नामु, अकाल पुरखु दा अमर करन वाला नामु, अकाल पुरखु दा

सुखदाई नामु, ही सभ तरहाँ दे सुखाँ दी मणी है। अकाल पुरखु दा नामु जो कि सभ सुखाँ दा मूल है, उस दा टिकाणा भगताँ जनाँ दे हिरदे विच हुंदा है। रहाउ दी पंगती विच गुरू साहिब समझाँदे हन, कि, अकाल पुरखु दा नामु जी सभ सुखाँ दा मूल है, सभ सुखाँ दी मणी है, ते सभ तों स्रेशट सुख है, अते इहि अकाल पुरखु दा नामु गुरमुखाँ दे हिरदे विच व्सदा है।

सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु ॥ भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥ (२६२)

http://www.geocities.ws/sarbjitsingh/BookGuruGranthSahibAndNaam.pdf

http://www.sikhmarg.com/pdf-files/sggs-naam.pdf,

अकाल पुरखु दी सिफति सालाह करन वाला कीरतन ताँ ही सफल हो सकदा है, जीवन विच सुख ताँ ही प्रापत हो सकदा है, जे कर गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे नामु॰ ठीक तरीके नाल समझ सकीइे, आपणे अंदर अकाल पुरखु दे नामु॰ वसा सकीइे। अकाल पुरखु दे हुकमु ते रज़ा॰ ठीक तरीके नाल समझ ते पछान सकीइे। जिस लई जरूरी है, कि गुरबाणी॰ वीचारन समें गुरबाणी दी रहाउ दी पंगती जाँ किसे उचित पंगती दी टेक लई जावे। **सबद गाइन करन समें टेक, रहाउ दी पंगती दी जाँ किसे उचित पंगती दी ही लैणी है, ना कि किसे वी पंगती दी। रहाउ दी पंगती विच पूरे सबद दा केंदरी भाव हुंदाँ है। जे कर टेक किसे होर पंगती दी लवाँगे ताँ असलीअत तों दूर हो जावाँगे।**

जिस मनुख दे आतमक जीवन वासते परमेसर ने विकाराँ दे राह विच ड्का मार द्ि‍ता, उस मनुख दे अंदरों परमेसर ने दुखाँ ते रोगाँ दा डेरा ही मुका द्ि‍ता। जिनहाँ जीवाँ उते अकाल पुरखु ने इहि किरपा कर द्ि‍ती, उह सारे जीव आतमक आनंद माणदे हन। **हे संत जनो! जिस मनुख॰ इहि यकीन हो जाँदा है कि पारब्रहम पूरन परमेसर सभ थावाँ विच मौजूद है, उस मनुख॰ सभ थावाँ विच सुख ही प्रतीत हुंदा है।** जिस मनुख दे अंदर अकाल पुरखु दी सिफति सालाह दी बाणी आ के व्स गई, उस मनुख ने आपणी सारी चिंता दूर कर लई। दइिआ दा सोमा अकाल पुरखु उस मनुख उुंते मेहरवान होइिआ रहिंदा है, जिहड़ा मनुख उस सदा काइिम रहिण वाले अकाल पुरखु दा नामु गुरबाणी दुआरा सदा उचारदा रहिंदा है।

सोरठि महला ५ ॥ परमेसरि दिता बंना ॥ दुख रोग का डेरा भंना ॥ अनद करहि नर नारी ॥ हरि हरि प्रभि किरपा धारी ॥१॥ संतहु सुखु होआ सभ थाई ॥ पारब्रहमु पूरन परमेसरु रवि रहिआ सभनी जाई ॥ रहाउ ॥ धुर की बाणी आई ॥ तिनि सगली चिंत मिटाई ॥ दइिआल पुरख मिहरवाना ॥ हरि नानक साचु वखाना ॥२॥१३॥७७॥ (६२७-६२८

इिस सबद विच, जे कर असीं टेक, "**परमेसरि दिता बंना ॥ दुख रोग का डेरा भंना** ॥", दी लैंदे हाँ। ताँ असीं मूळ भाव तों दूर हो जाँदे हाँ। अकसर रागी सिंघाँ॰ इिस सबद दी फुरमाइिश उदों कीती जाँदी है, जदों किसे दे घर पुतर पैदा हुंदाँ है। कि परमेशवर ने पुतर दे दिता है, हुण उनहाँ दे सारे दुख दूर हो जाणगे। जद कि **बंना** दे अरथ ताँ पुतर नहीं, बलकि ड्का, रुकावट, बंनहा हन।

जे कर असी टेक, "**धुर की बाणी आई ॥ तिनि सगली चिंत मिटाई** ॥", दी लैंदे हाँ, ताँ वी असीं मूळ भाव तों दूर हो जाँदे हाँ। किउंकि लोक इहि समझण लग जाँदे हन, कि गुरू गरंथ साहिब दी बाणी "**धुर की बाणी आई ॥**", दा इहि सबद अ्ज आ गिआ है, इिस लई अ्ज साडीआँ सारीआँ चिंताँवाँ दूर हो जाणगीआँ, "**तिनि सगली चिंत मिटाई** ॥"। परंतू गुरू साहिब ताँ कुझ होर ही समझाँदे हन, कि, "**संतहु सुखु होआ सभ थाई ॥**", वाली अवसथा बणाउुंण लई अकाल पुरखु॰ सरब विआपक समझणा ते वेखणाँ है, "**पारब्रहमु पूरन परमेसरु रवि रहिआ सभनी जाई ॥**"। **इिस लई सा॰ आपणी मन दी अवसथा ते सोच, गुरबाणी दुआरा इिस तरहाँ दी बणानी है, कि सा॰ अकाल पुरखु हमेशाँ सरब विआपक दिखाई देवे, हरेक दे हिरदे विच वसदा दिखाई देवे। फिर जिस मनुख॰ इहि यकीन हो जाँदा है, कि पारब्रहम पूरन परमेसर सभ थावाँ विच मौजूद है, उस मनुख॰ सभ थावाँ विच सुख ही प्रतीत हुंदा है। इिस लई टेक रहाउ दी पंगती दी लैणीं है, ताँ जो सा॰ सही गिआन दा मारग मिल सके, ते साडा जीवन सफला हो सके।** परंतू जे कर गलत टेक लवागे, "**(परमेसरि दिता बंना ॥)" जाँ "(धुर की बाणी आई ॥)"**, ताँ गुमराह हुंदे रहाँगे।

इिस सबद दी रहाउ दी पंगती दा भाव गउड़ी सुखमनी मः ५ दे हेठ लिखे सलोक दी तरहाँ है। अकाल पुरखु सारीआँ शकतीआँ नाल भरपूर है ते पूरन है, उह अकाल पुरखु सभ जीवाँ दे दुख दरद जाणदा है। गुरू साहिब समझाँदे हन कि, जिस अकाल पुरखु दे सिमरन नाल विकाराँ तों बच सकीदा है, उस अकाल पुरखु तों सदा सदके जाणा चाहीदा है।

सलोकु ॥ सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ॥ जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार ॥१॥ (२८२)

गुरू साहिब गुरबाणी विच जिथे कई वारी इिक म्ि‍तर दे तौर ते समझाँदे हन, उह हेठ लिखे सबद विच इिक माँ॰ उस दा फरज समझाँदे होइे, पुतर॰ असीस दे तौर ते समझाँदे हन कि, जिस अकाल पुरखु दे नामु सिमरन नाल सारे पाप नास हो जाँदे हन, जिस अकाल पुरखु दे नामु सिमरन नाल पितराँ दा वी संसार रूपी समुंदर तों पार उतारा हो जाँदा है, जिस अकाल पुरखु दे गुणाँ दा अंत नहीं पाइिआ जा सकदा, जिस अकाल पुरखु दा उरला ते परला बंना नहीं लभिआ जा सकदा, तूम सदा उस अकाल पुरखु दा नामु जपदा रहु। **हे पुतर! तूं माँ दी इहि असीस है, कि तूं अकाल पुरखु अ्ख झमकण जितने समें**

लड़ी वी ना भुले, तूं सदा जगत दे मालक अकाल पुरखु दा नामु जपदा रहु। हे पुतर! सतिगुरू तेरे उते सदा दइिआवान रहे, ते गुरू दी सतिसंगत नाल तेरा पिआर बणिआ रहे। जिवें क्पड़ा मनुख दा परदा ढ्कदा है, तिवें अकाल पुरखु तेरी इिज़त रखे, सदा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह तेरी आतमा दी ज़ुराक बणी रहे। हे पुतर! आतमक जीवन देण वाला नामु रूपी जल अंम्रितु सदा पींदा रहु, जिस नाल तेरा उुचा आतमक जीवन बणिआ रहे, अकाल पुरखु दा सिमरन कीतिआँ तेरे अंदर अमुक आनंद बणिआ रहे। हे पुतर! गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करन नाल आतमक ख़ुशीआँ प्रापत हुंदीआँ रहिंदीआँ हन, सभ आसाँ पूरीआँ हुंदीआँ रहिंदीआँ हन, ते चिंता कदे आपणा ज़ोर नहीं पा सकदी। हे पुतर! तेरा इिह मन भौरे दी तरहाँ बणिआ रहे, अकाल पुरखु दे चरन तेरे मन वासते भौरे दी तरहाँ कौल फुल बणे रहिण। गुरू साहिब समझाँदे हन, कि, अकाल पुरखु दा सेवक अकाल पुरखु दे चरनाँ नाल इिस तरहाँ लपटिआ रहिंदा है; जिस तरहाँ इिक पपीहा वरखा दी बूंद पी के खिड़ जाँदा है।

गूजरी महला ५ ॥ जिसु सिमरत सभि किलविख नासहि पितरी होइि उधारो ॥ सो हरि हरि तुम्ह सद ही जापहु जा का अंतु न पारो ॥१॥ पूता माता की आसीस ॥ निमख न बिसरउ तुम्ह कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुरु तुम्ह कउ होइि दइिआला संतसंगि तेरी प्रीति ॥ कापड़ु पति परमेसरु राखी भोजनु कीरतनु नीति ॥२॥ अंम्रितु पीवहु सदा चिरु जीवहु हरि सिमरत अनद अनन्ता ॥ रंग तमासा पूरन आसा कबहि न बिआपै चिंता ॥३॥ भवरु तुम्हारा इिहु मनु होवउु हरि चरणा होहु कउुला ॥ नानक दासु उुनि संगि लपटाइिए जिउु बूंदहि चात्रिकु मउुला ॥४॥३॥४॥ (४९६)

इिह धिआन विच रखणा है कि, गाइिन करदे समें सिरफ, "**पूता माता की आसीस ॥**" उुपर ही जोर नहीं देड़ी जाणा है, उुस तों अ्गे जो लिखिआ गिआ है, "**निमख न बिसरउु तुम्ह कउु हरि हरि सदा भजहु जगदीस ॥**", उुस उुपर वी उुतनाँ ही जोर देणा है, ताँ जो ठीक सिखिआ ते मारग दरसन हो सके। किते इिह भुलेखे विच नहीं रहिंणा है कि, अ्ज इिह सबद गाइिन करन लड़ी आ गिआ है, इिस लड़ी आपणे आप माँ दी असीस मिल जावेगी। असीस ताँ मिलणी है, जे कर, "**निमख न बिसरउु तुम्ह कउु हरि हरि सदा भजहु जगदीस ॥**", वाली अवसथा बणदी है।

रहाउु दी पंगती बंदूक दी गोली दी तरहाँ है, जाँ तीर दी नोक दी तरहाँ है, जिहड़ा कि सिधा अंदर मनुख दे मन दे अंदर धस जाँदा है ते अंदरों विकार बाहर क्ड देंदा है। परंतू इिह धिआन विच रखणा है, कि उुलटे पासे वलों च्लिआ होइिआ तीर कुझ वी नहीं कर सकदा है। जाँ कहि लए कि जे कर, रहाउु दी पंगती दी थाँ ते किसे होर पंगती दी टेक लैंदे हाँ, ताँ उुतनाँ प्रभाव नहीं पवेगा, ते इिह वी हो सकदा है, कि असीं गुमराह हो जाईइे।

जे कर मनुख नूं इिक अकाल पुरखु मिल पइे, ताँ दुनीआ दे होर सारे पदारथ मिल जाँदे हन, किउुंकि देण वाला ताँ उुह अकाल पुरखु आप ही है। जे कर गुरू दे सबद दुआरा सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करदे रहीइे, ताँ इिह कीमती मनुखा जनम सफल हो सकदा है। पर उुसे मनुख नूं गुरू पासों अकाल पुरखु दे चरनाँ दा निवास प्रापत हुंदा है, जिस दे म्थे उुँते चंगा भाग लिखिआ होइिआ होवे। **इिस लड़ी हे मेरे मन! सिरण इिक अकाल पुरखु नाल आपणी सुरति जोड़। इिक अकाल पुरखु दे पिआर तों बिना दुनीआ दी सारी दौड़ भ्ज जंजाल बण जाँदी है, ते इिह माइिआ दा मोह सारा विअरथ ही है।** जे कर मेरा सतिगुरू मेरे उुँते मिहर दी निगाह करे, ताँ मैं समझदा हाँ कि मै लखाँ पातिशाहीआँ दीआँ ख़ुशीआँ मिल गईआँ हन, किउुंकि जदों गुरू मैनूं अ्ख दे झमकण जितने समें वासते वी अकाल पुरखु दा नामु बख़शदा है, ताँ मेरा मन शाँत हो जाँदा है, मेरा सरीर शाँत हो जाँदा है, मेरे गिआन इिंदरे विकाराँ वलों हट जाँदे हन। परंतू उुसे मनुख ने सतिगुरू दे चरन फड़े हन, उुही मनुख सतिगुरू दा आसरा लैंदा है, जिस, पूरबले जनम दा कोई लिखिआ होइिआ चंगा लेख मिलदा है, जिस दे चंगे भाग जागदे हन। उुह समाँ कामयाब समझो, उुह घड़ी भागाँ वाली जाणो, जिस विच सदा थिर रहिण वाले रहिण वाले अकाल पुरखु नाल पिआर बणे। जिस मनुख नूं अकाल पुरखु दे नामु दा आसरा मिल जाँदा है, उुस, कोई दुख, कोई कलेश पोह नहीं सकदा। जिस मनुख, गुरू ने बाँह फड़ के विकाराँ विचों बाहर क्ढ लिआ, उुह संसार रूपी समुंदर विचों सही सलामति पार लंघ गिआ। इिह सारी बरकति, गुरू दी है ते साध संगति दी है। जि्थे साध संगति जुड़दी है, उुह थाँ सोहणा है ते पवित्र है। जिस मनुख ने साध संगति विच आ के पूरा गुरू लभ लिआ है, उुस, ही अकाल पुरखु दी हज़ूरी विच आसरा मिलदा है। गुरू साहिब समझाँदे हन, कि फिर उुस मनुख ने आपणा प्का टिकाणा उुस थाँ ते बणा लिआ है, जिथे आतमक मौत नहीं; जि्थे जनम मरन दा गेड़ नहीं; जिथे आतमक जीवन कदे कमज़ोर नहीं हुंदा।

सिरीरागु महला ५ ॥ सभे थोक परापते जे आवै इिकु हथि ॥ जनमु पदारथु सफलु है जे सचा सबदु कथि ॥ गुर ते महलु परापते जिसु लिखिआ होवै मथि ॥ १॥ मेरे मन इेकस सिउु चितु लाइि ॥ इेकस बिनु सभ धंधु है सभ मिथिआ मोहु माइि ॥१॥ रहाउु ॥ लख खुसीआ पातिसाहीआ जे सतिगुरु नदरि करेइि ॥ निमख इेक हरि नामु देइि मेरा मनु तनु सीतलु होइि ॥ जिस कउु पूरबि लिखिआ तिनि सतिगुर चरन गहे ॥२॥ सफल मूरतु सफला घड़ी जितु सचे नालि पिआरु ॥ दूखु संतापु न

लगड़ी जिसु हरि का नामु अधारु ॥ बाह पकड़ि गुरि काढिआ सोई उतरिआ पारि ॥३॥ थानु सुहावा पवितु है जिथै संत सभा ॥ ढोई तिस ही नो मिलै जिनि पूरा गुरू लभा ॥ नानक बधा घरु तहाँ जिथै मिरतु न जनमु जरा ॥४॥६॥७६॥ (४४)

इस सबद दी, "**लख खुसीआ पातिसाहीआ जे सतिगुरु नदरि करेइ ॥**", वाली टेक॒ वार वार बोलण नाल लोक अकसर इही समझण लग जाँदे हन, कि उह दीवान विच आ गइे हन, गुरू साहिब दी बीड़ दे दरसन हो गइे हन, हुण इह सबद सुण के उनहाँ॒ सभ तरहाँ दीआ खुशीआँ मिल जाणगीआँ। जेकर कोई विआह जाँ घरेलू कारज है, ताँ अकसर रागी इह सबद गाइिन करदे हन, ते कई ग्रथीआँ ने वी इह वाक लैण लई आपणे चिंन जा निशान बणाइे हुंदे हन। अजेहा करन नाल लोक भावक हो के अकसर भेटा वी जिआदा दे देंदे हन। परंतू इह धिआन विच र्खणा है, कि गुरू साहिब ताँ कोई होर ही सिखिआ दे रहे हन, **कि हे मेरे मन! तूं सिरफ इक अकाल पुरखु नाल आपणी सुरति जोड़, "मेरे मन इेकस सिउ चितु लाइि ॥ इेकस बिनु सभ धंधु है सभ मिथिआ मोहु माहि ॥१॥ रहाउ ॥"।**

उह अकाल पुरखु आपणे सेवक॒ कोई **अउखी घड़ी,** भाव दुख देण वाला समाँ नहीं वेखण देंदा, उह आपणा मुढ कदीमाँ दा पिआर वाला सुभाउ सदा चेते र्खदा है। प्रभू आपणा ह्थ दे के आपणे सेवक दी राखी करदा है, सेवक॒ उस दे हरेक साह दे नाल पालदा रहिंदा है। गुरू साहिब समझाँदे हन, कि **हे भाइी! मेरा मन वी उस अकाल पुरखु नाल जुड़िआ रहिंदा है, जो शुरू तों अजीर तक सदा मददगार बणिआ रहिंदा है। साडा उह मि्तर अकाल पुरखु धंन है, उस दी सदा सिफति करनी चाहीदी है।** मालक अकाल पुरखु दे हैरान करन वाले कौतक वेख के, उस दी वडिआई वेख के, सेवक दे मन विच वी ज़ुशीआँ बणीआँ रहिंदीआँ हन। हे नानक! तूं वी अकाल पुरखु दा नामु सिमर सिमर के आतमक आनंद माण, किउंकि जिस वी मनूख ने अकाल पुरखु दा सिमरन कीता, अकाल पुरखु ने पूरे तौर ते उस दी इ्ज़त र्ख लई।

धनासरी महला ५ ॥ अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरदु समाले ॥ हाथ देइि राखै अपने कउ सासि सासि प्रतिपाले ॥१॥ प्रभ सिउ लागि रहिए मेरा चीतु ॥ आदि अंति प्रभु सदा सहाई धंनु हमारा मीतु ॥ रहाउ ॥ मनि बिलास भइे साहिब के अचरज देखि बडाई ॥ हरि सिमरि सिमरि आनद करि नानक प्रभि पूरन पैज रखाई ॥२॥१५॥४६॥ (६८२)

इस सबद दी "**अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरदु समाले ॥**", वाली टेक॒ वार वार बोलण नाल लोक अकसर इही समझण लग जाँदे हन, कि उह दीवान विच आ गइे हन, गुरू साहिब दी बीड़ दे दरसन हो गइे हन, हुण इह सबद सुण के उनहाँ॒ किसे तरहाँ दी मुशकल नहीं होवेगी ते उनहाँ दी अरदास प्रवान हो गई है ते पूरी हो जावेगी। अजेहा करन नाल लोक भावक हो के अकसर भेटा वी जिआदा दे देंदे हन। परंतू गुरू साहिब ताँ कुझ होर ही करन दी सिखिआ दे रहे हन, **"प्रभ सिउ लागि रहिए मेरा चीतु ॥ आदि अंति प्रभु सदा सहाई धंनु हमारा मीतु ॥ रहाउ ॥"**, भला ताँ ही होणा है जे कर असीं, "**प्रभ सिउ लागि रहिए मेरा चीतु ॥**", वाली अवसथा बणाउंदे हाँ।

बाबर मु्गल बादशाह ने खुरासान दी सपुरदगी किसे होर॒ कर के हिंदुसतान ते हमला करन लई आइिआ ते हमले दे दौरान बाबर दीआँ मु्गल फौजाँ ने बहुत बरबादी कीती ते हिंदुसतानीआँ॒ बहुत डरा दिता, ते उथों दे लोक बुरी तरहाँ सहम गइे। उस समें गुरू नानक साहिब सैदपुर (ऐमनाबाद) विच सन। जेहड़े लोक आपणे एरज़ भुला के रंग रलीआँ विच पै जाँदे हन, उनहाँ॒ सज़ा भुगतणी ही पैंदी है, इस बारे अकाल पुरखु आपणे उते कोई दोश नहीं आउण देंदा है। आपणे एरज़ भुला के विकाराँ विच मसत होइे पठाण हाकमाँ॒ दंड देण लई अकाल पुरखु ने मु्गल बादशाह बाबर॒ जमराज बणा के हिंदुसतान ते चड़्हाई करके भेजिआ। अकाल पुरखु ने जिथे बद चलण ते विकाराँ विच मसत होइे पठाण हाकमाँ॒ सजा दिती, उस दे नाल नाल गरीब ते निह्थे लोक वी पीसे गइे। इतनी मार पई कि उह लोक हाइि हाइि करके पुकार उठे। इह सभ कुझ वेख के, हे अकाल पुरखु! तै (**तैकी**) कोई दरद नहीं आइिआ। असलीअत इह है कि दरद किउं आवे, जदों कि सारी खलकत उस अकाल पुरखु दी ही है, सभ जीव वी उस अकाल पुरखु दे ही हन, ते सभ कुझ अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा अनुसार ही हो रिहा है, ते उस अकाल पुरखु दा नियम अट्ल है। **हे अकाल पुरखु! तूम सभनाँ जीवाँ दी सार र्खण वाला हैं। जे कोई ताकतवर दूसरे ताकतवर दी मार कुटाई करे ताँ वेखण वालिआँ दे मन विच गुसा गिला जाँ रोस नहीं हुंदा, किउंकि दोवें धिराँ इक दूजे॒ करारे ह्थ विखा लैंदे हन।** परंतू जे कोई शेर वरगा ताकतवर गाईआँ दे व्ग वरगे कमज़ोर निह्थिआँ गरीबाँ उते ह्ला कर के मारन॒ आ पइे, ताँ इस दी पुछ व्ग दे खसम॒ ही हुंदी है। इथे इह वी धिआन विच र्खणा है, कि परजा प्रती जुमेवारी राजे दी वी हुंदी है, ते हिंदुसतान दे राजे विकारी हो चुके सन ते परजा ते जुलम करदे सन। जिस तरहाँ कुते एपरे कुतिआँ॒ वेख के जर नहीं सकदे, ते इक दूजे॒ पाड़ खाँदे हन। इसे तरहाँ मनुखाँ॒ पाड़ खाण वाले इहनाँ मु्गलाँ ने रतनाँ वरगे सोहणे इसत्रीआँ मरदाँ॒ मार मार के मि्टी विच रोल दि्ता, ते मरे पिआँ दी कोई सार लैण वाला नहीं। हे अकाल पुरखु! तेरी रज़ा तूम ही जाणदा है, इह सभ तेरी ताकत दा ही करिशमा है, कि तूम आप ही संबंध जोड़न वाला है, ते आप ही इहनाँ॒ मौत दे घाट उतार के आपणिआँ नालों विछोड़न वाला है। धन पदारथ हकूमत आदिक दे नशे विच मनुख आपणी हसती॒ भुल जाँदा है ते बड़ी आकड़ विखा विखा के होरनाँ॒ दुख देंदा है, पर इह नहीं समझदा कि जे कोई मनुख आपणे आप॒ किनाँ वी

वॾा अखवा लइे, ते मन मंनीआँ रंग रलीआँ माण लइे, ताँ वी उह खसम अकाल पुरखु दीआँ नज़राँ विच इक कीड़ा ही दि्सदा है, जो धरती तों दाणे चुग चुग के निरबाह करदा है, हउमै दी मसती विच उह मनुख आपणी ज़िंदगी अजाईं ही गवा जाँदा है। गुरू नानक साहिब समझाँदे हन, कि जेहड़ा मनुख विकाराँ वलों आपा मार के आतमक जीवन जीऊंदा है, ते अकाल पुरखु दा नामु चेते र्खदा है, उही मनुख इथों कुझ ख्टट सकदा है।

आसा महला १ ॥ खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइिआ ॥ आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइिआ ॥ इेती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइिआ ॥१॥ करता तूं सभना का सोई ॥ जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई ॥१॥ रहाउ ॥ सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई ॥ रतन विगाड़ि विगोइे कुतीं मुइिआ सार न काई ॥ आपे जोड़ि विछोड़े आपे वेखु तेरी वडिआई ॥२॥ जे को नाउ धराइे वडा साद करे मनि भाणे ॥ खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे ॥ मरि मरि जीवै ता किछु पाइे नानक नामु वखाणे ॥३॥५॥३९॥

कुझ लोक इिह परचारदे हन, कि गुरू नानक साहिब अकाल पुरखु ते दोश ला रहे हन, कि हे अकाल पुरखु! लोकाँ੍ इितनी मार पई, कि उह हाइि हाइि करके पुकार उठे, की तॖ कोई दरद नहीं आइिआ? जे कर असीं अजेहा दोश लाण वाले अरथ करीइे, ताँ असीं गुरू नानक साहिब दे सि्ख धरम दे मुढले सिधाँत, "*हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥ (१)*", दे उलट जा रहे हाँ, किउंकि सभ कुझ ताँ अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा अनुसार ही होइिआ है। जे कर इिस सबद दी रहाउ दी पंगती੍ धिआन नाल वीचारीइे ताँ अरथ सप्शट हो जाँदे हन कि गुरू नानक साहिब अकाल पुरखु ते अजेहा कोई दोश नहीं ला रहे हन, "*करता तूं सभना का सोई ॥ जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई ॥१॥ रहाउ ॥*"। सारी खलकत उस अकाल पुरखु दी ही है, सभ जीव वी उस अकाल पुरखु दे ही हन, ते सभ कुझ अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा अनुसार ही हो रिहा है, ते उस अकाल पुरखु दा नियम अट्ल है। इिक पासे मुग़ल बादशाह बाबर है, ते दूसरे पासे विकाराँ विच मसत होइे पठाण हाकम हन। इितनाँ ज़रूर होइिआ है कि, उस दे नाल नाल गरीब ते निह्थे लोक वी पीसे गइे। उस गुनाह लई उह लोक वी ज़ुमेवार हन, किउंकि उनहाँ लोकाँ ने आपणे फरज੍ नहीं पछाणिआ, सच ते पहिरा नहीं दिता ते विकारी हाकमाँ दा साथ देंदे रहे। अ्ज दे लोक राज विच वी इिही हाल है, वोटाँ पाण वेले ताँ लोक आपणा फरज समझदे नहीं, ते बाअद विच ५ साल लई नेतावाँ दे नुकस क्ढदे रहिंदे हन ते पछताँदे रहिंदे हन।

पउड़ी ॥ तखति राजा सो बहै जि तखतै लाइिक होई ॥ (१०८८)

इिह जगत दुखाँ दा समुंदर है, इिनहाँ दुखाँ੍ वेख के मेरी जिंद कंबदी है। अकाल पुरखु तों बिना होर कोई बचाण वाला दि्सदा नहीं, जिस दे पास मैं मिंनताँ कराँ। होर आसरे छ्ड के मैं दुखाँ दे नास करन वाले अकाल पुरखु੍ ही सिमरदा हाँ, उह सदा ही बख़्शशाँ करन वाला है। फिर उह मेरा मालिक सदा ही बख़्शशाँ ताँ करदा रहिंदा है, परंतू उह मेरे नि्त दे तरले सुण के कदे अ्कदा नहीं, बख़्शशाँ विच नि्त इिउं है, जिवें पहिली वारी ही बख़्शश करन ल्गा है। हे मेरी जिंदे! हर रोज़ उस मालिक੍ याद करिआ कर, किउंकि, दुखाँ विचों आख़्र उह ही बचाँदा है। हे मेरी जिंदे! धिआन नाल सुण उस मालिक दा आसरा लिआँ ही दुखाँ दे समुंदर विचों पार लंघ सकीदा है। हे दिइआल अकाल पुरखु! मैं तैथों सदा सदके जाँदा हाँ, मेहर कर, आपणा नामु देह, ताँ कि तेरे नामु दुआरा मैं दुखाँ दे इिस समुंदर विचों पार लंघ सकाँ। सदा काइिम रहिण वाला अकाल पुरखु ही सभ थाईं मौजूद है, उस तों बिना होर कोई नहीं। जिस जीव उते उह मेहर दी निगाह करदा है, उह उस दी सेवा करदा है, उस दे गुणाँ दी वीचार करदा है, उस੍ हमेशाँ याद करदा रहिंदा है। हे पिआरे अकाल पुरखु! तेरी याद तों बिना मैं किस तरहाँ रहि सकदा हाँ, मैं ताँ तेरे बिना विआकुल हो जाँदा हाँ। मॖ कोई उह व्डी दाति देह, जिस दा सदका मैं तेरे नामु विच जुड़िआ रहाँ। हे पिआरे! तैथों बिना होर अैसा कोई नहीं है, जिस पास जा के मैं इिह अरज़ोई कर सकाँ। दुखाँ दे इिस सागर विचों तरन लई मैं आपणे मालिक अकाल पुरखु੍ ही याद करदा हाँ, किसे होर पासों मैं इिह मंग नहीं मंगदा। नानक आपणे उस मालिक दा ही सेवक है, उस मालिक तों ही खिन खिन पल पल सदके जाँदा हाँ। हे मेरे मालिक अकाल पुरखु! मैं तेरे नामु तों खिन खिन पल पल कुरबान जाँदा हाँ।

धनासरी महला १ घरु १ चउपदे ॥ ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार ॥ दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु ॥१॥ साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ॥१॥ रहाउ ॥ अनदिनु साहिबु सेवीअै अंति छडाइे सोइि ॥ सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइि ॥२॥ दइिआल तेरै नामि तरा ॥ सद कुरबाणै जाउ ॥१॥ रहाउ ॥ सरबं साचा इेकु है दूजा नाही कोइि ॥ ता की सेवा सो करे जा कउ नदरि करे ॥३॥ तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥ सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहाँ ॥ दूजा नाही कोइि जिसु आगै पिआरे जाइि कहा ॥१॥ रहाउ ॥ सेवी साहिबु आपणा अवरु न जाचंउ कोइि ॥ नानकु ता का दासु है बिंद बिंद चुख चुख होइि ॥४॥ साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइि ॥१॥ रहाउ ॥४॥१॥ (६६०)

इस इक सबद विच ४ रहाउ हन, ते उह चारे ही बहुत महतव पूरन हन। उस अकाल पुरखु तों **सदा सदके जाणा है, उस** अकाल पुरखु दे नामु लई अरदास करनी है, हमेशाँ उस अकाल पुरखु दी सेवा करनी है, उस दे गुणाँ दी वीचार करनी है, उस अकाल पुरखु ू हमेशाँ याद करदे रहिणा है, उस अकाल पुरखु तों **बिना होर ऐसा कोई नहीं है, जिस पास जा के असीं अरज़ोई कर सकदे हाँ, इस लई उस** अकाल पुरखु दे नामु **तों खिन खिन पल पल कुरबान जाणा है।**

कई सबदाँ विच रहाउ नहीं हुंदा है, इस लई गाइन करदे समें उस सबद लई उचित पंगती दी टेक लैणी हुंदी है। जे कर धिआन नाल वेखिआ जावे ताँ बहुत वारी सबद दी आखरी पंगती विच महतव पूरन संदेश दिता हुंदा है। इस लई टेक आखरी पंगती दी जाँ, नानक सबद वाली पंगती दी वी लई जा सकदी है।

हे मन ू मोह लैण वाले अकाल पुरखु! तेरे उुचे मंदर हन, तेरे महल ऐसे हन कि, उनहाँ दा उरला ते पारला बंना नहीं दिसदा। हे अकाल पुरखु! तेरे दर ते तेरे धरम असथानाँ विच, तेरे संत जन बैठे सोहणे लग रहे हन। हे बेअंत अकाल पुरखु! हे दइआल अकाल पुरखु! हे ठाकुर! तेरे धरम असथानाँ दा उरला ते पारला बंना नहीं दिसदा है, तूं सभ उपर दइआ करन वाला है, ते तेरे धरम असथानाँ विच, तेरे संत जन सदा तेरा कीरतन गाँदे हन। हे अकाल पुरखु! जिथे वी साध संत इकठे हुंदे हन, उथे तै ही धिआउंदे हन। हे दइआ दे घर अकाल पुरखु! हे सभ दे मालक अकाल पुरखु! तूं दइआ कर के, तरस कर के गरीबाँ अनाथाँ उते किरपाल हुंदा है। हे अकाल पुरखु! नानक बेनती करदा है कि, तेरे दरशन दे पिआसे तेरे संत जन, तै मिल के तेरे दरसन दा सुख माणदे हन।

गउड़ी महला ५ ॥ मोहन तेरे ऊचे मंदर महल अपारा ॥ मोहन तेरे सोहनि दुआर जीउ संत धरम साला ॥ धरम साल अपार दैआर ठाकुर सदा कीरतनु गावहे ॥ जह साध संत इकत्र होवहि तहा तुझहि धिआवहे ॥ करि दइआ मइआ दइआल सुआमी होहु दीन क्रिपारा ॥ बिनवंति नानक दरस पिआसे मिलि दरसन सुखु सारा ॥१॥ (२४८)

इस सबद विच पहिली पंगती, "*मोहन तेरे ऊचे मंदर महल अपारा ॥*", दी बजाइ आखरी नानक पद वाली पंगती, "*बिनवंति नानक दरस पिआसे मिलि दरसन सुखु सारा ॥*", दी टेक लैणी जिआदा उचित रहेगी, किउंकि उस विच अरदास, निमरता, ते अकाल पुरखु दे दरसनाँ लई ताँघ है।

हे अकाल पुरखु! तेरी सिफति सालाह दे बचन सोहणे लगदे हन, तेरी चाल अनोखी हे ते जगत दे जीवाँ दी चाल नालों वखरी है। हे अकाल पुरखु जी! सारे जीव सिरफ तै ही सदा काइम रहिण वाला मंनदे हन, होर सारी स्रिशटी ने मिटी हो जाणा है, भाव होर सभ नासवंत है। हे अकाल पुरखु! सिरफ तै इक ू असथिर मंनदे हन, जिस दा सरूप बिआन नहीं कीता जा सकदा, तूं सभ दा पालणहार है, ते जिस ने सारी स्रिशटी विच आपणी सता वरताई होई है। हे अकाल पुरखु! तै तेरे भगताँ ने गुरू दे बचन दुआरा तै पिआर वस कीता होइआ है, तूं सभ दा मुढ है, तूं सरब विआपक है, तूं सारे जगत दा मालक है। हे अकाल पुरखु! सारे जीवाँ विच मौजूद होण करके तूं आप ही उमर भोग के जगत तों चला जाँदा है, फिर वी तूं ही आप सदा काइम रहिण वाला है, तूं ही जगत विच आपणी सता वरताई होई है। नानक बेनती करदा है, आपणे सेवकाँ दी तूं आप ही लाज रखदा है, सारे सेवक भगत जन तेरी सरन पैंदे हन।

मोहन तेरे बचन अनूप चाल निराली ॥ मोहन तूं मानहि एकु जी अवर सभ राली ॥ मानहि त एकु अलेखु ठाकुरु जिनहि सभ कल धारीआ ॥ तुधु बचनि गुर कै वसि कीआ आदि पुरखु बनवारीआ ॥ तूं आपि चलिआ आपि रहिआ आपि सभ कल धारीआ ॥ बिनवंति नानक पैज राखहु सभ सेवक सरनि तुमारीआ ॥२॥ (२४८)

इस सबद विच पहिली पंगती, "*मोहन तेरे बचन अनूप चाल निराली ॥*", दी बजाइ आखरी नानक पद वाली पंगती, "*बिनवंति नानक पैज राखहु सभ सेवक सरनि तुमारीआ ॥*", दी टेक लैणी जिआदा उचित रहेगी, किउंकि उस विच अरदास, निमरता, ते अकाल पुरखु दी सरन विच आउंण दी ते उस दा सेवक बणन लई ताँघ है।

हे अकाल पुरखु! तै साध संगति धिआउंदी है, तेरे दरसन दा धिआन धरदी है। हे अकाल पुरखु! जेहड़े जीव तै जपदे हन, अंत वेले मौत दा सहम उनहाँ दे नेड़े नहीं ढुकदा। जेहड़े तै इकागर मन नाल धिआउंदे हन, मौत दे जमकालु दा सहम उनहाँ ू पोह नहीं सकदा, आतमक मौत उनहाँ उते प्रभाव नहीं पा सकदी। जेहड़े मनुख आपणे मन दुआरा, आपणे बोलाँ दुआरा, ते आपणे करमाँ दुआरा, अकाल पुरखु ू याद करदे रहिंदे हन, उह सारे मन इछित फल प्रापत कर लैंदे हन। हे सरब विआपक! हे अकाल पुरखु! उह मनुख वी तेरा दरसन कर के उुची सूझ वाले हो जाँदे हन, जिहड़े पहिलाँ गंदे, कुकरमी ते महा मूरख हुंदे हन। नानक बेनती करदा है, हे अकाल पुरखु! तेरा राज निहचलु है, सदा काइम रहिण वाला है, तूं आपणे आप विच संपूरन है।

मोहन तुधु सतसंगति धिआवै दरस धिआना ॥ मोहन जमु नेड़ि न आवै तुधु जपहि निदाना ॥ जमकालु तिन कउ लगै नाही जो इक मनि धिआवहे ॥ मनि बचनि करमि जि तुधु अराधहि से सभे फल पावहे ॥ मल मूत मूड़ जि मुगध होते सि देखि दरसु सुगिआना ॥ बिनवंति नानक राजु निहचलु पूरन पुरख भगवाना ॥३॥ (२४८)

इस सबद विच पहिली पंगती, "*मोहन तुधु सतसंगति धिआवै दरस धिआना ॥*", दी बजाइे आखरी नानक पद वाली पंगती, "*बिनवंति नानक राजु निहचलु पूरन पुरख भगवाना ॥*", दी टेक लैणी जिआदा उचित रहेगी, किउंकि उस विच अरदास, निमरता, ते अकाल पुरखु दे राज दी विशालता ते उस पूरन अकाल पुरखु दे गुण गाइे जा रहे हन।

हे अकाल पुरखु! तूं बड़ा सोहणा फलिआ होइआ है, तूं बड़े व्डे परवार वाला है। हे अकाल पुरखु! पुतराँ भरावाँ मित्राँ वाले व्डे व्डे टबर तूं सारे दे सारे संसार रूपी समुंदर तों पार लंघा देंदा है। हे अकाल पुरखु! जिनहाँ ने तेरा दरसन कीता, उनहाँ दे अंदरों तूं हंकार दूर कर दि्ता। तूं सारे जहान, ही तारन दी समर्था र्खदा है। हे अकाल पुरखु! जिनहाँ वडभागीआँ ने तेरी सिफति सालाह कीती, आतमक मौत उनहाँ दे नेड़े नहीं ढुकदी। हे सभ तों व्डे! सरब विआपक अकाल पुरखु! तेरे गुण बेअंत हन, बिआन नहीं कीते जा सकदे। नानक बेनती करदा है कि, मैं तेरा ही आसरा लिआ है, जिस आसरे दी बरकति नाल मैं इस संसार रूपी समुंदर तों पार लंघ रिहा हाँ।

मोहन तूं सुफलु फलिआ सणु परवारे ॥ मोहन पुत्र मीत भाई कुटंब सभि तारे ॥ तारिआ जहानु लहिआ अभिमानु जिनी दरसनु पाइिआ ॥ जिनी तुधनो धंनु कहिआ तिन जमु नेड़ि न आइिआ ॥ बेअंत गुण तेरे कथे न जाही सतिगुर पुरख मुरारे ॥ बिनवंति नानक टेक राखी जितु लगि तरिआ संसारे ॥ ४॥२॥ (२४८)

इस सबद विच पहिली पंगती, "*मोहन तूं सुफलु फलिआ सणु परवारे ॥*", दी बजाइे आखरी नानक पद वाली पंगती, "*बिनवंति नानक टेक राखी जितु लगि तरिआ संसारे ॥*", दी टेक लैणी जिआदा उचित रहेगी, किउंकि उस विच अरदास ते निमरता है, अते समझाइिआ जा रिहा है, कि जिस मनु्ख ने अकाल पुरखु दा एट आसरा लै लिआ, उह इस संसार रूपी समुंदर तों पार लंघ जावेगा।

गुरू ग्रंथ साहिब विच लगभग २२ वाराँ हन, वाराँ विच पहिलाँ सलोक ते फिर पउड़ी आउंदी है, कुझ वाराँ विच सिरफ पउड़ी ही हुंदी है। अकसर इह ही वेखण विच आउंदा है, कि कई वारी गुरबाणी गाइन करन वाले सिरफ सलोक ही गाइन करदे हन, जदों कि सलोकाँ दा सबंध पउड़ी नाल हुंदा है, ते वार दा केंदरी भाव पउड़ी विच हुंदा है। इस लई गाइन करदे समें टेक वी पउड़ी विचों ही लैणी चाहीदी है। इह वी धिआन र्खणा हुंदा है, कि पउड़ी विचों किहड़ी पंगती जिआदा उचित रहेगी। जिआदा तर आखरी पंगती जाँ नानक पद वाली पंगती दी टेक लैणी जिआदा उचित रहिंदी है।

भाई गुरदास जी आपणीआँ सारीआँ वाराँ विच सि्खी सिधाँत, समझाण लई पहिलाँ इक उदाहरण देंदे हन, उस सिधाँत, होर सप्शट करन लई फिर दूसरी, तीसरी, चौथी, पंजवी, उदाहरण देंदे हन। भाई गुरदास जी दीआँ सारीआँ वाराँ विच सि्खी सिधाँत, वार दी आखरी पंगती विच दिता हुंदा है। इस लई सि्खी सिधाँताँ, ठीक तरहाँ समझण लई, गाइन करदे समें भाई गुरदास जी दीआँ वाराँ विच आखरी पंगती दी टेक ही लैणीं है, नहीं ताँ गुमराह हो जावाँगे।

भाई गुरदास जी दी हेठ लिखी वार विचों "*वाहिगुरू गुरू मंत्र है जप हउमैं खोई*" वाली पंगती ताँ लोकाँ कोलों अनेकाँ वारी सुणी जाँदी है, परंतू इस पूरी वार बारे कोई विरला ही पड़हन ते जानण दी कोशिश करदा है। किउंकि इस पंगती विच "*वाहिगुरू गुरू मंत्र है*" लिखिआ है, प्रचारकाँ ने इस दा अ्खरी अरथ लोकाँ मन विच वार वार पा के, इह नतीजा क्ढ दिता है, कि गुरबाणी अनुसार "वाहिगुरू" अ्खर, गुरमंत्र है, ते नाल ही आपणे कोलो बणा लिआ कि मंत्र दा अरथ रटन करना है। पूरे गुरू गरंथ साहिब विच किते वी इह नहीं लिखिआ गिआ है कि "वाहिगुरू" अकाल पुरख दा नामु है। इह वी लोकाँ ने वार वार प्रापेगंडा करके आपणे कोलों बणा लिआ है, कि "वाहिगुरू" नामु है। इस तरहाँ दे प्रचार करके अ्जकल अकसर बहुत सारे गुरदुआरा साहिबाँ विच इही हो रिहा है, कि कोई बाणी पड़हे जाँ ना पड़हे, परंतू "वाहिगुरू" दा रटन जरूर कीता जाँदा है। कई रागीआँ ने ताँ गुरबाणी दे गाइन करन समें इस दी मिलावट वी खुले आम करनी शुरू दिती है।

गुर सिखहु गुर सिख है पीर पीरहुं कोई॥ शबद सुरत चेला गुरू परमेशर सोई॥ दरशन द्रिशटि धिआन धर गुरु मूरति होई॥ शबद सुरति कर कीरतन सतसंग विलोई॥ वाहिगुरू गुरू मंत्र है जप हउमैं खोई॥ आप गवाइे आप है गुण गुणी परोई ॥२॥ (१३-२-६)

भाई गुरदास जी दी इस वार विच सि्खी सिधाँत आखरी पंगती विच है, "***आप गवाइे आप है गुण गुणी परोई ॥२॥***"। इस वार दी आखरी पंगती दा सिधा सबंध गुरबाणी दे सबद, "**मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥ तिसु सेवक के कारज रासि ॥ सेवा करत होइि निहकामी ॥ तिस कउ होत परापति सुआमी ॥ (२८६)**", नाल है। इस लई गाइन **करदे समें भाई गुरदास जी दी वार दी आखरी पंगती दी ही टेक लैणीं है, नहीं ताँ गुमराह हो जावाँगे।**

http://www.geocities.ws/sarbjitsingh/Bani2280GurMag20160825.pdf,
http://www.sikhmarg.com/2016/0828-mantar-ki-hann.html,

भाई गुरदास जी दी हेठ लिखी वार विच पहिली पंगती दी टेक लै के दीवाली मनाउंण लई आम लोकाँ, गुमराह कीता जाँदा है। इस वार विच भाई गुरदास जी उदाहरण दे के समझा रहे हन कि, दीवाली दी राति, लोक दीवे बालदे हन,

जिहड़े कि कुझ समें बाअद बुझ जाँदे हन। जात कुजात दे न्क्कि व्डे तारे, आकाश विच रात्, दिखाई देंदे हन, जिहड़े कि दिन समें अलोप हो जाँदे हन। लोक बाग विचों चुण चुण के फुल तोड़ के लै जाँदे हन, परंतू उनहाँ दी खुशबो कुझ दिन वासते ही हुंदी है। लोक तीरथाँ ते यातरा लई जाँदे हन ते उथे अ्खाँ नाल वेख के आपणे आप्, कुझ दिनाँ लई निहाल करदे हन। हरि चंदउरी दे कलपित नगर दा नज़ारा रात्, वसा के दिन्, चुक लिआ जाँदा है। इह सभ, कुझ समें लई बाहरी नजारे जाँ खुशीआँ देंदे हन। परंतू गुरमुखि आतमिक आनंद रूपी सुखाँ दी दात, गुरू दे शबद दुआरा सदीवी काल लई संभाल के र्खदे हन। गुरमुखि गुरू दे शबद्, हमेशाँ याद र्खदे हन ते सदा आनंद माणदे रहिंदे हन।

दीवाली दी राति दीवे बालीअनि ॥ तारे जाति सनाति अंबरि भालीअनि ॥ फुलाँ दी बागाति चुणि चुणि चालीअनि ॥ तीरथि जाती जाति नैण निहालीअनि ॥ हरि चंदउरी झाति वसाइ उचालीअनि ॥ गुरमुखि सुख फल दाति सबदि समहालीअनि ॥ (१९-६-६)

भाई गुरदास जी इस वार विच आरजी नजारे जाँ बाहरी खुशीआँ दी थाँ, गुरू दे शबद दुआरा सदीवी आतमिक अनंद दी अवसथा काइम करन लई सिखिआ दे रहे हन, "***गुरमुखि सुख फल दाति सबदि समहालीअनि ॥***"। इस लई आखरी पंगती दी थाँ किसे होर पंगती दी टेक लै के गुमराह करन वाले गाइकाँ तों बचणा है।

सि्ख धरम विच पाठ, कीरतन, सबद वीचार दे नाल नाल ढाडीआँ दी वाराँ अते कवी दरबार दी खास मह्तता है, परंतू गुरू घर विच अधूरी बाणी परवान नहीं है। ढाडीआँ अते कवीआँ दीआँ रचनावाँ दीवान विच गाइन हो सकदीआँ हन, परंतू उनहाँ् कीरतन नहीं किहा जा सकदा है, कीरतन सिरफ स्ची बाणी दा ही हो सकदा है।

उही मनुख अकाल पुरखु दे नामु विच जुड़दा है, जेहड़ा गुरू दी सरन पैंदा है। गुरू दी सरन पिआँ मनुख अकाल पुरखु दे नामु विच ल्गदा है, ते गुरू उस मनुख् मिलदा है, जिस दे म्थे उते भाग जाग पैण। फिर उस मनुख दे हिरदे विच उह अकाल पुरखु आ व्सदा है ते, उस दा मन ते सरीर ठंढा ठार हो जाँदा है, विकाराँ वलों अडोल हो जाँदा है। **हे मेरे मन! तूं अकाल पुरखु दी इहो जिही सिफति सालाह करदा रहु, जेहड़ी तेरी इस ज़िंदगी विच वी कंम आवे, ते परलोक विच वी तेरे कंम आवे।** हे मेरे मन! तूं उस अकाल पुरखु दी सिफति सालाह करदा रहु, जिस दा नामु जपिआँ हरेक किसम दा डर दूर हो जाँदा है, हरेक बिपता टल जाँदी है, विकाराँ वल दौड़दा मन टिकाणे आ जाँदा है, जिस दा नामु जपिआँ फिर कोई दुख पोह नहीं सकदा, ते अंदरों हउमै दूर हो जाँदी है। जिस दा नामु जपिआँ कामादिक पंजे विकार काबू आ जाँदे हन, आतमक जीवन देण वाला नामु रूपी जल हिरदे विच इक्ठा कर सकीदा है, माइआ दी त्रेह बुझ जाँदी है ते अकाल पुरखु दी दरगाह विच वी कामयाब हो जाईदा है। हे भाई! तूं उस अकाल पुरखु दी सिफति सालाह करदा रहु जिस दा नामु जपिआँ पिछले कीते होए क्रोड़ाँ पाप मिट जाँदे हन, ते अगाँह वासते भले मनुख बण जाईदा है, जिस दा नामु जपिआँ मन विकाराँ दी तपश वलों ठंढा ठार हो जाँदा है ते आपणे अंदर दी विकाराँ दी सारी मैल दूर कर लैंदा है। जिस दा जाप कीतिआँ मनुख् अकाल पुरखु दा नामु रूपी रतन प्रापत हो जाँदा है, सिमरन दी बरकति नाल मनुख अकाल पुरखु नाल इतना रच मिच जाँदा है कि प्रापत कीते होए, उस नामु रूपी रतन् मुड़ नहीं छ्डदा, जिस दा नामु जपिआँ आतमक आनंद मिलदा है, आतमक अडोलता विच टिकाणा मिल जाँदा है, ते मानो, अनेकाँ बैकुंठाँ दा निवास हासल हो जाँदा है। हे भाई! तूं उस अकाल पुरखु दी सिफति सालाह करदा रहु जिस दा नामु जपिआँ त्रिशनाँ दी अ्ग पोह नहीं सकेगी, मौत दा सहम नेड़े नहीं ढुकेगा आतमक मौत आपणा ज़ोर नहीं पाइगी, हर थाँ ते तेरा मुख उुँजल रहेंगा, ते हरेक किसम दा दुख दूर हो जाइगा। हे भाई! तूं उस अकाल पुरखु दी सिफति सालाह करदा रहु, जिस दा नामु जपिआँ मनुख दे जीवन सफर विच कोई औखिआई नहीं बणदी, ते मनुख इक रस आतमक आनंद दे गीत दी धुनि सुणदा रहिंदा है, मनुख दे अंदर हर वेले आतमक आनंद दी रौ चली रहिंदी है, जिस दा नामु जपिआँ मनुख दा हिरदा रूपी कमल दा फुल विकाराँ वलों उलट के, अकाल पुरखु दी याद वल सि्धा परत पैंदा है, ते मनुख लोक परलोक विच पवित्र सोभा ख्टदा है। गुरू साहिब समझाँदे हन, कि गुरू जिस मनुख दे हिरदे विच अकाल पुरखु दा नामु जपण दा उपदेश वसाँदा है, उस मनुख उते गुरू ने मानो सभ तों वधीआ किसम दी मिहर दी नज़र कर दि्ती। जिस मनुख् पूरा गुरू मिल पिआ, उस ने अकाल पुरखु दी इक रस सिफति सालाह् आपणे आतमा वासते सुआदला भोजन बणा लिआ।

गउड़ी महला ५ ॥ गुर सेवा ते नामे लागा ॥ तिस कउ मिलिआ जिसु मसतकि भागा ॥ तिस कै हिरदै रविआ सोइ ॥ मनु तनु सीतलु निहचलु होइ ॥१॥ ऐसा कीरतनु करि मन मेरे ॥ ईहा ऊहा जो कामि तेरै ॥१॥ रहाउ ॥ जासु जपत भउ अपदा जाइ ॥ धावत मनूआ आवै ठाइ ॥ जासु जपत फिरि दूखु न लागै ॥ जासु जपत इह हउमै भागै ॥२॥ जासु जपत वसि आवहि पंचा ॥ जासु जपत रिदै अंम्रितु संचा ॥ जासु जपत इह त्रिसना बुझै ॥ जासु जपत हरि दरगह सिझै ॥३॥ जासु जपत कोटि मिटहि अपराध ॥ जासु जपत हरि होवहि साध ॥ जासु जपत मनु सीतलु होवै ॥ जासु जपत मलु सगली खोवै ॥४॥ जासु जपत रतनु हरि मिलै ॥ बहुरि न छोडै हरि संगि हिलै ॥ जासु जपत कई बैकुंठ वासु ॥ जासु जपत सुख सहजि निवासु ॥५॥ जासु जपत इह अगनि न पोहत ॥ जासु जपत इहु कालु न जोहत ॥ जासु जपत तेरा निरमल माथा ॥ जासु

जपत सगला दुखु लाथा ॥६॥ जासु जपत मुसकलु कछू न बनै ॥ जासु जपत सुणि अनहत धुनै ॥ जासु जपत इहु निरमल सोइ ॥ जासु जपत कमलु सीधा होइ ॥७॥ गुरि सुभ दिसटि सभ ऊपरि करी ॥ जिस कै हिरदै मंत्रु दे हरी ॥ अखंड कीरतनु तिनि भोजनु चूरा ॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥८॥२॥ (२३६)

जे कर उपर लिखीआँ, गुरबाणी दीआँ कीरतनु सबंधी सिखिआवाँ, इक्ठा करीइे ताँ असीं संखेप विच कहि सकदे हाँ कि:

लेख दा आरंभ २ लेख दा संखेप २ लेख दा सार, निचोड़ जाँ मंतव २

- गुरू गरंथ साहिब विच अंकित गुरबाणी अनुसार कीरतनु दी प्रीभाशा इह है, कि गुरू गरंथ साहिब विच अंकित गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे गुण गाइिन करने, गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे गुणाँ दी वीचार करनी, अकाल पुरखु दे हुकमु, पूरे सतिगुरू दुआरा समझणा ते अकाल पुरखु दे हुकमु ते रजा अनुसार चलणा, मन, विकाराँ दे हलिआँ वलों सुचेत करन लइी बिबेक बुधी हासल करनी, अकाल पुरखु दे नामु रूपी अंम्रित दा सुआद माणणा, हर वेले अकाल पुरखु दा कीरतनु करना, साध संगति विच बैठ के अकाल पुरखु दे गुण गाइिन करने, मन ते काबू करना ते मन, खिंडण तों रोकणा, सारीआँ गिआन इंदरीआँ, विकारा तों रोकणा अते कीरतनु पूरे गुरू दे सबद दुआरा, सुची बाणी दा ही ही हो सकदा है।
- जे कर गुरबाणी दे सबद, ठीक तरीके नाल गाइिन नहीं कीता जाँदा है, ताँ उुस दे अरथ भाव बदल जाँदे हन। जे कर अरथ भाव ही बदल गइे ताँ असीं ठीक वीचार किस तरहाँ कर सकदे हाँ? ठीक गिआन किस तरहाँ हासल कर सकदे हाँ?, अकाल पुरखु दे हुकमु, किस तरहाँ पछान सकदे हाँ?, सही बिबेक बुधी किस तरहाँ हासल कर सकदे हाँ?, नामु रूपी अंम्रित दा सुआद किस तरहाँ मान सकदे हाँ?, आपणे मन ते काबू किस तरहाँ कर सकदे हाँ? ते आपणीआँ सारीआँ गिआन इंदरीआँ, विकारा तों किस तरहाँ रोक सकदे हाँ?
- अ्जकल गुरबाणी दे सबद विचों गलत टेक लै के, जाँ रहाए दी पंगती तों इलावा किसे होर पंगती दी टेक लै के, गुरबाणी दे सबदाँ दे भाव अरथ बदल के लोकाँ, अकसर गुमराह कीता जा रिहा है।
- इिस लइी गुरू दी मति लै के सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु विच टिके रहु। सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दे सिमरन दी ही कमाइी करो, सदा थिर रहिण वाले अकाल पुरखु दी सिफति सालाह विच जुड़े रहो।
- अकाल पुरखु दे मिलाप लइी साध संगति विच बैठ के अकाल पुरखु दे गुण गाइिन करने हन ते आपणा हंकार तिआग के अकाल पुरखु दे गुण सिखणे ते अपनाउुंणे हन।
- जदों असीं आपणे औगुण तिआग के गुरू दी मत लइी अरदास करदे हाँ, अकाल पुरख दे गुण आपणे अंदर पैदा करन दा उुपराला करदे हाँ, ताँ साडा सुधार आपणे आप होणा शुरू हो जाँदा है, जिस सकदा साडा जीवन सफल हो जाँदा है। इिस लइी सबद गाइिन करन समें रहाउु दी पंगती दी टेक लैणी बहुत जरूरी है ताँ जो सा् जीवन दा सही रसता समझ आ सके, ते जीवन विच गुमराह होण तों बच सकीइे।
- जे कर गुरू कोलो कुझ मंगण वाले सबद दा कीरतन हो रिहा है, ताँ कदी वी उुची आवाज़ विच नहीं करना चाहीदा है। उुची आवाज़ सिरफ फिलमी गीताँ विच ही लोकाँ, चंगी लगदी है। परंतू गुरबाणी कीरतन विच उुँची आवाज़ कदे वी प्रवान नहीं हो सकदी है।
- जे कर असीं सबद गाइिन करन समें रहाउु (सबद दा केंदरी भाव) दी टेक नहीं लैंदे हाँ, ताँ असीं सबद दे मूळ भाव तों दूर हो जावाँगे।
- अकल इिह है कि अकाल पुरखु दी सिफति सालाह वाली बाणी पड़्हीइे, इिस दे डूंघे भेत समझीइे ते होरनाँ, अकाल पुरखु दे गुण ते उुस दे हुकमु ते रजा बारे समझाइीइे। गुरबाणी दुआरा पाइी गइी अकल वरत के ही किसे तरहाँ दा दान ते सहाइिता कीती जावे, इिह ना होवे कि दान करन नाल असीं नख्टू ते मंगते ही पैदा करी जाइीइे।
- किसे गरीब किरती, रुजगार जाँ धन दी लोड़ हो सकदी है, ते किसे अमीर, सबद गुरू अनुसार जीवन जाच दी लोड़ हो सकदी है, किसे लोड़वंद बृचे, विदिआ ते गिआन दी लोड़ हो सकदी है।
- अकाल पुरखु दी सिफति सालाह करन वाला कीरतन ताँ ही सफल हो सकदा है, जे कर गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे हुकमु ते रज़ा, ठीक तरीके नाल समझ ते पछान सकीइे। जिस लइी जरूरी है, कि गुरबाणी, वीचारन समें गुरबाणी दी रहाउु दी पंगती जाँ किसे उुचित पंगती दी टेक लइी जावे। रहाउु दी पंगती विच पूरे सबद दा केंदरी भाव हुंदाँ है। जे कर टेक किसे होर पंगती दी लवाँगे ताँ असलीअत तों दूर हो जावाँगे।
- सा् आपणी मन दी अवसथा ते सोच, गुरबाणी दुआरा इिस तरहाँ दी बणानी है कि, सा् अकाल पुरखु हमेशाँ सरब विआपक दिखाइी देवे, हरेक दे हिरदे विच वसदा दिखाइी देवे। फिर जिस मनुख, इिह यकीन हो जाँदा है कि पारब्रहम पूरन परमेसर सभ थावाँ विच मौजूद है, उुस मनुख, सभ थावाँ विच सुख ही प्रतीत हुंदा है।

- इिह धिआन विच र्‍खणा है कि, "*पूता माता की आसीस ॥*" वाला सबद गाइिन करदे समें सिरफ, "*पूता माता की आसीस ॥*" उुपर ही जोर नहीं देढ़ी जाणा है, उुस तों अ्‍गे जो लिखिआ गिआ है, "*निमख न बिसरउ तुम्‍ कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस ॥*", उुस उुपर वी उुतनाँ ही जोर देणा है, ताँ जो ठीक सिखिआ ते मारग दरसन हो सके। किते इिह भुलेखे विच नहीं रहिंणा है कि, अ्‍ज इिह सबद गाइिन करन लड़ी आ गिआ है, इिस लड़ी आपणे आप माँ दी असीस मिल जावेगी। असीस ताँ मिलणी है, जे कर, "*निमख न बिसरउ तुम्‍ कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस ॥*", वाली अवसथा बणदी है।
- रहाउु दी पंगती बंदूक दी गोली दी तरहाँ है जाँ तीर दी नोक दी तरहाँ है, जिहड़ा कि सिधा अंदर मनुख दे मन दे अंदर धस जाँदा है ते अंदरों विकार बाहर क्‍ड देंदा है।
- धन पदारथ हकूमत आदिक दे नशे विच मनुख आपणी हसती, भुल जाँदा है ते बड़ी आकड़ विखा विखा के होरनाँ, दुख देंदा है, हउुमै दी मसती विच उुह मनुख आपणी ज़िंदगी अजाईं ही गवा जाँदा है। गुरू नानक साहिब समझाँदे हन, कि जेहड़ा मनुख विकाराँ वलों आपा मार के आतमक जीवन जीउुंदा है, ते अकाल पुरखु दा नामु चेते र्‍खदा है, उुही मनुख इिथों कुझ ख्‍ट सकदा है।
- कड़ी सबदाँ विच रहाउु नहीं हुंदा है, इिस लड़ी गाइिन करदे समें उुस सबद लड़ी उुचित पंगती दी टेक लैणी हुंदी है। जे कर धिआन नाल वेखिआ जावे ताँ बहुत वारी सबद दी आखरी पंगती विच मह्‍तव पूरन संदेश दिता हुंदा है। इिस लड़ी टेक आखरी पंगती दी जाँ, नानक सबद वाली पंगती दी वी लड़ी जा सकदी है।
- गुरू ग्रंथ साहिब विच लगभग २२ वाराँ हन, वाराँ विच पहिलाँ सलोक ते फिर पउुड़ी आउुंदी है, वार दा केंदरी भाव पउुड़ी विच हुंदा है। इिस लड़ी गाइिन करदे समें टेक वी पउुड़ी विचों ही लैणी चाहीदी है। इिह वी धिआन र्‍खणा हुंदा है, कि पउुड़ी विचों किहड़ी पंगती जिआदा उुचित रहेगी। जिआदा तर आखरी पंगती जाँ नानक पद वाली पंगती दी टेक लैणी जिआदा उुचित रहिंदी है।
- भाड़ी गुरदास जी आपणीआँ सारीआँ वाराँ विच स्‍िखी सिधाँत, समझाण लड़ी पहिलाँ इिक उुदाहरण देंदे हन, उुस सिधाँत, होर सप्‍शट करन लड़ी फिर दूसरी, तीसरी, चौथी, पंजवी, उुदाहरण देंदे हन। भाड़ी गुरदास जी दीआँ सारीआँ वाराँ विच स्‍िखी सिधाँत, वार दी आखरी पंगती विच दिता हुंदा है। इिस लड़ी स्‍िखी सिधाँताँ, ठीक तरहाँ समझण लड़ी, गाइिन करदे समें भाड़ी गुरदास जी दीआँ वाराँ विच आखरी पंगती दी टेक ही लैणीं है, नहीं ताँ गुमराह हो जावाँगे। इिस लड़ी आखरी पंगती दी थाँ किसे होर पंगती दी टेक लै के गुमराह करन वाले गाइिकाँ तों बचणा है।
- स्‍िख धरम विच पाठ, कीरतन, सबद वीचार दे नाल नाल ढाडीआँ दी वाराँ अते कवी दरबार दी खास मह्‍तता है, परंतू गुरू घर विच अधूरी बाणी परवान नहीं है। ढाडीआँ अते कवीआँ दीआँ रचनावाँ दीवान विच गाइिन हो सकदीआँ हन, परंतू उुनहाँ, कीरतन नहीं किहा जा सकदा है, कीरतन सिरफ स्‍ची बाणी दा ही हो सकदा है।
- जिस मनुख, पूरा गुरू मिल पिआ, उुस ने अकाल पुरखु दी इिक रस सिफति सालाह, आपणे आतमा वासते सुआदला भोजन बणा लिआ।

गुरबाणी दीआँ रहाउु सबंधी सिखिआवाँ दा उुपर लिखिआ संखेप साृ सपूशट करके समझादा है, कि गुरू गरंथ साहिब विच अंकित गुरबाणी दा कीरतन करन समें रहाउु दी पंगती दी टेक लैणी जरूरी है

लेख दा आरंभ २ लेख दा संखेप २ लेख दा सार, निचोड़ जाँ मंतव २

- गुरू गरंथ साहिब विच अंकित गुरबाणी, ठीक तरीके नाल समझण वीचारन ते गिआन हासल करन लड़ी गुरबाणी दे सबद, ठीक तरीके नाल गाइिन करना बहुत जरूरी है। ताँ ही असीं अकाल पुरखु दे हुकमु, पछान सकदे हाँ, सही बिबेक बुधी हासल कर सकदे हाँ, ते नामु रूपी अंम्रित दा सुआद मान सकदे हाँ।
- अ्‍जकल गुरबाणी दे सबद विचों गलत टेक लै के, जाँ रहाए दी पंगती तों इिलावा किसे होर पंगती दी टेक लै के, गुरबाणी दे सबदाँ दे भाव अरथ बदल के लोकाँ, अकसर गुमराह कीता जा रिहा है।
- सबद गाइिन करन समें रहाउु दी पंगती (सबद दा केंदरी भाव) दी टेक लैणी बहुत जरूरी है ताँ जो साृ जीवन दा सही रसता समझ आ सके, ते जीवन विच गुमराह होण तों बच सकीड़े। जे कर असीं सबद गाइिन करन समें रहाउु दी टेक नहीं लैंदे हाँ, ताँ असीं सबद दे मूळ भाव तों दूर हो जावाँगे।, ते फिर जीवन दी असलीअत तों दूर हो जावाँगे।
- रहाउु दी पंगती बंदूक दी गोली दी तरहाँ है जाँ तीर दी नोक दी तरहाँ है, जिहड़ा कि सिधा अंदर मनुख दे मन दे अंदर धस जाँदा है ते अंदरों विकार बाहर क्‍ड देंदा है।

- अकल इिह है कि अकाल पुरखु दी सिणति सालाह वाली बाणी पड़्हीइे, इिस दे डूंघे भेत समझीइे ते होरनाँ् अकाल पुरखु दे गुण ते उुस दे हुकमु ते रजा बारे समझाइीइे। गुरबाणी दुआरा पाइी गइी अकल वरत के ही किसे तरहाँ दा दान ते सहाइिता कीती जावे, इिह ना होवे कि दान करन नाल असीं नखट्टू ते मंगते ही पैदा करी जाइीइे।
- अकाल पुरखु दी सिणति सालाह करन वाला कीरतन ताँ ही सफल हो सकदा है, जे कर गुरबाणी दुआरा अकाल पुरखु दे हुकमु ते रज़ा् ठीक तरीके नाल समझ ते पछान सकीइे। जिस लइी जरूरी है, कि गुरबाणी् वीचारन समें गुरबाणी दी रहाउु दी पंगती जाँ किसे उुचित पंगती दी टेक लइी जावे।
- कइी सबदाँ विच रहाउु नहीं हुंदा है, इिस लइी गाइिन करदे समें उुस सबद लइी उुचित पंगती दी टेक लैणी हुंदी है। जे कर धिआन नाल वेखिआ जावे ताँ बहुत वारी सबद दी आखरी पंगती विच मह्तव पूरन संदेश दिता हुंदा है। इिस लइी टेक आखरी पंगती दी जाँ, नानक सबद वाली पंगती दी वी लइी जा सकदी है।
- वार दा केंदरी भाव पउुड़ी विच हुंदा है। इिस लइी गाइिन करदे समें टेक वी पउुड़ी विचों ही लैणी चाहीदी है। इिह वी धिआन र्खणा हुंदा है, कि पउुड़ी विचों किहड़ी पंगती जिआदा उुचित रहेगी। जिआदा तर आखरी पंगती जाँ नानक पद वाली पंगती दी टेक लैणी जिआदा उुचित रहिंदी है।
- भाइी गुरदास जी दीआँ सारीआँ वाराँ विच सि्खी सिधाँत, वार दी आखरी पंगती विच दिता हुंदा है। इिस लइी सि्खी सिधाँताँ् ठीक तरहाँ समझण लइी, गाइिन करदे समें भाइी गुरदास जी दीआँ वाराँ विच आखरी पंगती दी टेक ही लैणीं है, नहीं ताँ गुमराह हो जावाँगे। इिस लइी आखरी पंगती दी थाँ किसे होर पंगती दी टेक लै के गुमराह करन वाले गाइिकाँ तों बचणा है।
- सि्ख धरम विच पाठ, कीरतन, सबद वीचार दे नाल नाल ढाडीआँ दी वाराँ अते कवी दरबार दी खास मह्तता है, परंतू गुरू घर विच अधूरी बाणी परवान नहीं है। ढाडीआँ अते कवीआँ दीआँ रचनावाँ दीवान विच गाइिन हो सकदीआँ हन, परंतू उुनहाँ् कीरतन नहीं किहा जा सकदा है, कीरतन सिरफ स्ची बाणी दा ही हो सकदा है।

“वाहिगुरू जी का जलसा वाहिगुरू जी की फतिह”

(डा: सरबजीत सिंघ) (Dr. Sarbjit Singh)
RH1 / E-8, Sector-8, Vashi, Navi Mumbai - 400703.

Email = sarbjitsingh@yahoo.com,
Web = http://www.geocities.ws/sarbjitsingh, http://www.sikhmarg.com/article-dr-sarbjit.html